क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानी विजय सिंह पथिक द्वारा रचित प्रेरक साहित्य का अध्ययन

डॉ. कौशल्या सोलंकी

विजय सिंह पथिक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख क्रांतिकारी एवं प्रेरक साहित्यकार थे, जिनका जीवन राष्ट्रभक्ति, त्याग और सामाजिक चेतना का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करता है। भूपसिंह से विजय सिंह पथिक बनने तक की उनकी यात्रा संघर्ष, साहस और वैचारिक प्रतिबद्धता से परिपूर्ण रही। राजस्थान में किसान आंदोलनों, विशेषत: बिजोलिया आंदोलन, के संगठन और नेतृत्व के साथ-साथ उन्होंने अपने लेखन द्वारा जनमानस में स्वतंत्रता, स्वाभिमान और राष्ट्रीय एकता की भावना जागृत की। उनकी कविताएँ और रचनाएँ न केवल क्रांतिकारी चेतना से ओत-प्रोत हैं, बल्कि मानवता, लोकतंत्र और वसुधैव कुटुम्बकम की व्यापक दृष्टि को भी अभिव्यक्त करती हैं।

क्रान्तिकारी विजय सिंह पथिक का जन्म उत्तरप्रदेश के पश्चिमी भाग के बुलन्द शहर जिले के गुढावली गांव में 1882 में हुआ। उनका वास्तविक नाम भूपसिंह था। राजस्थान आने पर जब वह टॉडगढ़ से भेष बदलकर नजरबंदी से भागे तब उन्होंने अपना नाम बदलकर विजय सिंह पथिक रख लिया। जिससे पुलिस उनको भूपसिंह के रूप में पहचान न सके। उनकी माता का नाम कंवल कुँवर व पिता का नाम हम्मीर सिंह था। जिनका देहान्त उनके बाल्यकाल में ही हो गया था। उनका बचपन गरीब स्थिति में बीता।

1884 की क्रान्ति में देश के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम 1857 में उनके परिवार की बड़ी भूमिका रही। स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने के लिए पथिक अपनी माता कंवल कुँवर से प्रेरित रहे। वे हिन्दी, उर्दू, पारसी, अंग्रेजी, संस्कृत, मराठी, बंगला व गुजराती भाषा के अच्छे ज्ञाता थे। उन्होंने इतिहास, राजनीति, दर्शन, साहित्य, धर्मशास्त्र, समाजवाद इत्यादि विषयों का गंभीर अध्ययन किया था।

इनके अध्ययनकाल में 1907 में इनका सम्पर्क प्रसिद्ध क्रान्तिकारी देशभक्त शचीन्द्र सान्याल से स्थापित हुआ। उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर वे उनके क्रान्तिकारी दल में सम्मिलित हो गये। शचीन्द्र सान्याल ने ही उनका परिचय रास बिहारी बोस से करवाया जो उस समय क्रान्तिकारी संस्था बंग अनुशीलन समिति के प्रमुख कार्यकर्ता थे। रास बिहारी बोस से ही पथिक जी ने बम बनाने की शिक्षा व आतंकवाद व क्रान्तिकारी के

सैद्धान्तिक पक्ष व व्यावहारिक पक्ष की शिक्षा प्राप्त की। उसके बाद उनको क्रान्तिकारी गतिविधियों को अन्जाम देने हेतु भेजा जाने लगा।

21 फरवरी 1915 भारत की आजादी के लिए सशस्त्र क्रान्ति के लिए तिथि निश्चित की गई। राजस्थान में खरवा ठाकुर गोपाल सिंह को दामोदर दास राठी से मिलकर ब्यावर पर व भूपसिंह को अजमेर व नसीराबाद पर अधिकार करने का अधिकार सौंपा गया तब भूपसिंह ने राजस्थान की क्रान्तिकारी शक्तियों को संगठित करने का कार्य आरम्भ कर दिया।

ब्रिटिश पुलिस के गुप्तचर कृपाल सिंह द्वारा उनके बारे में जानकारी एकत्रित कर सरकार को भेजने की सूचना पर क्रान्तिकारियों ने क्रान्ति की तिथि बदलकर 21 फरवरी 1915 के स्थान पर 19 फरवरी 1915 कर दी। क्रान्ति की सूचना मिलने पर सरकार सचेत हो गयी और क्रान्ति असफल हो गई। खरवा ठाकुर गोपाल सिंह व भूपसिंह को टॉडगढ़ के किले में नज़रबन्द कर दिया। लाहौर षड़यंत्र केस में भूपसिंह का नाम आने के पश्चात वह टॉडगढ़ से भेष बदल कर निकल गये।

इसके पश्चात उन्होने अपना कार्य क्षेत्र राजस्थान को चुना नाथद्वारा के पास मोही में पाठशाला आरम्भ की किन्तु वहाँ से भी अधिक सुरक्षित स्थान जहाजपुर पहुँचे। विजय सिंह पथिक की प्रेरणा से ही चित्तौड़ में विद्या प्रचारणीय सभा की स्थापना की। बिजोलिया पँहुचें और वहाँ के किसानों को उनके कष्टों से मुक्ति दिलाने के लिए सत्याग्रह हेतु तैयार किया। वहाँ के किसानों ने अनेक कष्ट सह कर भी विजय सिंह पथिक के निर्देशन में सफल आन्दोलन किया।

पथिक के क्रान्तिकारी जीवन के अतिरिक्त उनके व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण आयाम एक लेखक के रूप में उनके द्वारा लिखित साहित्य – उन्होंने जेल में रहकर करीब 30 पुस्तकों का लेखन किया। स्वतन्त्रता आन्दोलन में उनके द्वारा लिखित कविताएँ स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान आमजन को प्रेरित करती रही। पथिक जी का हृदय सरल और निष्कपट था। वह मातृभूमि और पीड़ित मानव के लिए उद्वेलित हो उठता था। अतएव उनकी काव्य धारा भी सरल निर्मल और हृदय को छूकर उसमें कम्पन उत्पन्न करने की क्षमता रखती है।

उन्होंने पुस्तक में सर्वप्रथम प्रार्थनाओं और वन्दना को स्थान दिया है। उनकी 'मातृम वन्दना' को पढ़कर किसके हृदय में मातृभूमि के प्रति प्रेम उत्पन्न नही होगा –

सिन्धु को साड़ी बना परिधान है जिसने किया।

रतन सहृदय पहाड़ों को हृदय पर है लिया।
है सूर्य सा सौभाग्य बिन्दु ललाट में जिसके लगा।
है शून्य सा सुवितान जिसके अति मनोहर जगमगा।
जिसका अधीश्वर विष्णु है जो सब सुखों की धाम है।
उज शस्य स्यामल मातुभू को बार-बार प्रणाम है।

पथिक जी की राष्ट्रीयता संकुचित नहीं थी। वे वास्तव में 'वसुधैव कुटुम्बकम' के मंत्र के उपासक थे और पीड़ित मानवता के उद्धबोधक थे।

उनकी अंतर्राष्ट्रीय प्रार्थना की कतिपय पंक्तियाँ –

भावे प्रभु। फिर वे सौख्य साज।
फिर हो भूतल पर प्रेम राज्य
रहे विश्व के मानव सारे मिलकर बन्धु समान।
जनतन्त्रों के पुष्पों का यह बने विश्व उद्यान।
सबके सिर हो स्वतन्त्र ताज।।

पथिक जी ही पहले व्यक्ति थें जिन्होंने विभिन्न देशी राज्यों की शासकीय इकाइयों को स्वीकार न कर इस प्रदेश को राजस्थान नाम दिया और अपने तथा राजस्थान सेवा संघ द्वारा इसी भावना को समस्त प्रदेश में फैलाने का प्रयत्न किया। उस भावना को बल देने के लिए उन्होंने राजस्थान का गीत भी लिखाया इसके बाद पथिक जी ने गीतों के द्वारा प्रचार कार्य किया। वे स्वयं गीत लिखते रहते थे।

नमों राजस्थान –

अजित ललित हरित सबित प्रविट शन्ति पुंज,
प्रकृति प्रषित सुमन ग्रसित अमिट गिर निकुंज
गहन वनों से अभेद्य सहज ही अथक अक्लेश
स्वार्थ धैर्य वीर्य, शौर्य के विलास स्थान नमों इत्यादि

वैभव पर उनकी एक दूसरी कविता में उन्होंने कैसी तीखी चोट की है वह भी देखिए –

दिल लगा हमारा फकीरी में
कर में गीता मन में सेवा, दुनिया भर जागीरी में
वह तुमको तुम उनको लुटो है यह हाल अमीरी में।
इत्यादि.....

उनका एक गीत यह भी है –

पधारो फिर म्हां के गणराज।
फिर गणरात सिखाओं म्हाने, पंथ राज को रास्तों।
म्हाका राजकाज म्हा करलों, शासन होवे सस्तों।।
पांच पंच में हारया, जीव्या कुणने आवे लाज
रक्षा शिक्षा न्याय सभी म्हां गांव गांव मिल करला
अहालता रो खरचो मेरा, सव्य हृदय में धरला
न्याय करा हंसा जू साचो सुधरे सारा काज
जगंल खान्या आप सम्हाला करो खड़ा उद्योग
गांव गांव ने चमन बनावा बांको लेकर भोज।
गांव गांव में फिर म्हा मेला गणपित के सिर ताज
गांव गांव पंचायत घर ही गांव गांव पाठशाला।।

(उक्त गीत 15 पंक्तियों का है।)

विजय सिंह पथिक द्वारा लिखित साहित्य न केवल उनको उच्च कोटि का साहित्यकार होना दर्शाता है वरन् उनकी चारित्रिक विशेषताओं को भी उजागर करता है। यह आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि विजय सिंह पथिक केवल एक क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानी ही नहीं, बल्कि एक प्रखर चिंतक, समाज-सुधारक और प्रेरणादायी साहित्यकार भी थे। उनका जीवन त्याग, संघर्ष और राष्ट्रनिष्ठा का अनुपम उदाहरण है। 1857 की क्रांतिकारी विरासत से प्रेरित होकर उन्होंने न केवल सशस्त्र क्रांति में सक्रिय भूमिका निभाई, बल्कि राजस्थान में जन-जागरण और संगठन का व्यापक कार्य किया। बिजोलिया किसान आंदोलन में उनका नेतृत्व उनके सामाजिक सरोकारों और जनहितैषी दृष्टिकोण को प्रमाणित करता है।

उनकी साहित्य-साधना उनके व्यक्तित्व का अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष है। जेल-जीवन के दौरान रचित उनकी काव्य और गद्य कृतियाँ राष्ट्रीय चेतना, मानवता, लोकतांत्रिक आदर्शों और सामाजिक समता की भावनाओं से ओत-प्रोत हैं। उनकी रचनाओं में मातृभूमि के प्रति अटूट प्रेम, विश्व-बंधुत्व की भावना और जनतांत्रिक मूल्यों की स्थापना का स्पष्ट आह्वान मिलता है। उन्होंने 'राजस्थान' नाम के प्रचार और प्रादेशिक एकता की भावना को

सुदृढ़ करने में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

इस प्रकार विजय सिंह पथिक का प्रेरक साहित्य स्वतंत्रता आंदोलन का सशक्त सांस्कृतिक आयाम प्रस्तुत करता है। उनका जीवन और लेखन आने वाली पीढ़ियों के लिए देशभक्ति, सामाजिक चेतना और नैतिक आदर्शों का स्थायी प्रेरणा-स्रोत है।

संदर्भ

1. शंकर सहाय सक्सेना, *पथिक राजस्थान केसरी श्री विजय सिंह पथिक की जीवनी,* नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर, 1963
2. *'गोरा हट जा' स्वतन्त्रता आन्दोलन की राजस्थानी प्रेरक रचना,* द्वितीय संस्करण, राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी, जोधपुर, 1997
3. शंकर सहाय सक्सेना, पद्माश्री शर्मा, *बिजौलिया किसान आन्दोलन का इतिहास,* राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर, 1972
4. मोहन लाल गुप्ता, *राजस्थान का स्वतंत्रता आन्दोलन और राजस्थान का एकीकरण,* राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2017
5. गोपीनाथ शर्मा, *राजस्थान का इतिहास,* शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा, 2021
6. बृजकिशोर शर्मा, *राजस्थान में किसान एवं आदिवासी आन्दोलन, राजस्थान,* हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2001

अध्यापिका

रा.उ.मा.वि., बलीचा, गिर्वा

उदयपुर (राजस्थान)